

वृद्धावस्था और वृद्धाओं की समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रो. पुरुषोत्तम भगवंत मनगटे¹

सारांश (Abstract)

वृद्धावस्था मानव जीवन का अंतिम चरण है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तनों से गुजरता है। आधुनिक समाज में जहाँ तकनीकी प्रगति और जीवनशैली में तीव्र परिवर्तन हुए हैं, वहीं वृद्धों की स्थिति दिन-प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है। पारिवारिक संरचना में बदलाव, एकल परिवारों की बढ़ती संख्या, आर्थिक निर्भरता और मूल्य-परिवर्तन के कारण वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएँ बढ़ रही हैं। यह शोध पत्र वृद्धावस्था की सामाजिक स्थिति, वृद्धों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार के प्रकार, कारण, प्रभाव और समाधान का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रस्तावना (Introduction)

वृद्धावस्था उम्र बढ़ने की एक जैविक प्रक्रिया है, जिससे कोई भी इंसान बच नहीं सकता। इसकी शुरुआत जन्म लेते और अधिक यथार्थ रूप में तो गर्भ में आते ही हो जाती है जो मृत्यु के साथ समाप्त हो जाती है। अन्य शब्दों में कहें तो एक समाज की उम्र वृद्धों की जनसंख्या की बढ़ोतरी के साथ बढ़ती है और शेष जनसंख्या के घटने पर घटती जाती है। यह जनसांख्यिकी संक्रमण का परिणाम है जिसके अन्तर्गत जनसंख्या ऊंचे से नीचे प्रजनन और मृत्यु दरों में भ्रमण करती रहने है। यह अपरिहार्य और अपरिवर्तनीय प्रक्रिया एक व्यक्ति पर शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालती है। इसके अलावा यह कहा जाता है कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक निहितार्थ है। अतएव वृद्धावस्था पर किए जा रहे अध्ययन यह दर्शाते हैं, कि वरिष्ठों की देखभाल के समस्याओं को समझा जा रहा है, जो 21 वीं शताब्दी की सबसे बड़ी जरूरत है। वृद्धावस्था वह अवस्था है जब व्यक्ति की कार्यक्षमता घटने लगती है और वह दूसरों पर अधिक निर्भर हो जाता है। भारत जैसे परंपरागत समाज में वृद्धों को सम्मान और मार्गदर्शक माना जाता था, किंतु आज तेजी से बदलती जीवनशैली ने इस स्थिति को कमजोर कर दिया है। संयुक्त परिवारों के विघटन और भौतिकतावादी सोच ने वृद्धों को अकेला कर दिया है। परिणामस्वरूप, वृद्धों के साथ उपेक्षा, अपमान, शोषण और हिंसा जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

वृद्धावस्था/बुढ़ापे की परिभाषा (Defining Ageing/Old Age)

यद्यपि वृद्धावस्था क्या है, ये सभी जानते हैं तथापि इसे परिभाषित करना सरल नहीं है। मनुष्य औसत जीवन चक्र में वृद्धावस्था या बढ़ती उम्र, सभी समाजों में श्रेष्ठ मानी जाती है। पर बुढ़ा: की सामान्य

¹ धारेश्वर शिक्षण संस्था के कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, चिंचोली लिंबाजी तालुका: कन्नड, जिला: छत्रपति संभाजीनगर

परिभाषाओं के बावजूद किस उम्र का व्यक्ति बूढ़ा माना जाए, इस पर एक राय नो है। दुनिया के अधिकांश विकसित देशों में वृद्ध और बुजुर्ग व्यक्ति की पाश्चात्य अवधारणा अन्तर्गत काल के क्रमानुसार 65 वर्ष की आयु को स्वीकार कर लिया गया है। हालात विकासशील और अविकसित देशों में ये स्थिति अनुकूल नहीं है और संयुक्त राष्ट्र का भी मानक निर्धारित नहीं किया गया पर सामान्य तौर पर 60 की उम्र को वृद्धावस्था की जनसंता के तौर पर माना जाता है। एक सर्वमान्य स्वीकृत परिभाषा के अभाव में, कई सारे मामलों में, जिस उम्र में आँक सेवानिवृत्त होता है, पेंशन प्राप्त करता है, वही उम्र बुढ़ापे की मानी जाती है, यह सर्वस्व परिभाषा है। गोरमैन (2000) के अनुसार, 'बुढ़ापे की प्रक्रिया एक जैविक वास्तविकता। जिसकी अपनी क्रियाशीलता/गतिशीलता काफी हद तक मानवीय नियंत्रण से बाहर है। जो भी। यह निर्माण का विषय है जिसमें हर समाज का वृद्धावस्था का अपना आशय है। विकसित दुग्ग में, कालक्रम के अनुसार समय एक सर्वोपरि भूमिका निभाता है। विकसित देशों में बुढ़ापे (वृद्धावस्था) की शुरुआत सेवानिवृत्ति की उम्र, लगभग 60 प वर्ष मानी जाती है। विकसित दुनिया के अधिकांश हिस्सों में वृद्धावस्था की उम्र के सम्बन्ध कालानुक्रमिक उम्र का थोड़ा बहुत या बिल्कुल भी लेना-देना नहीं है। उसके मामले में सामान्य रूप से स्थापित अन्य परिभाषाएं/अर्थ अधिक महत्वपूर्ण हैं, जो अधिक उम्र को कार्य की भूमिकाएं सौंपनी कम कर देती है। अतएव विकसित दुनिया में कालानुक्रमिक उम्र के पड़ावों के विपरीत जो जीवन क्रम को दिखाती है, विभिन्न विकसित देशों में वृद्धावस्था की शुरुआत तब होती है, जब उनका सक्रिय योगदान असंभव होने लगे। जब विभिन्न विकासशील देशों का ध्यान वृद्ध जनसंख्या पर गया, तब वृद्धावस्था की परिभाषा का मार्ग विभिन्न विकसित देशों के जैसे ही था, सरकार द्वारा सेवानिवृत्ति की आयु की शुरुआत को वृद्धावस्था मानना। बाद में 1970 के दशक में अफ्रीका में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय मानवशास्त्रीय अध्ययन के परिणामों को विकासशील देशों (ग्लासकाँक एवं फिनमैन) में बुढ़ापे की परिभाषा के लिए एक आधार माना गया। परिभाषा की मुख्यतया तीन श्रेणियां हैं। ये हैं - (1) कालक्रम (chronology), (2) सामाजिक भूमिका में परिवर्तन (कार्य की प्रकृति में परिवर्तन, बच्चों की वयस्क स्थिति और रजोनिवृत्ति (menopause) की उम्र) और (3) क्षमताओं में परिवर्तन (असामान्य स्थिति, शारीरिक क्षमता में परिवर्तन)। बढ़ती उम्र के इस सांस्कृतिक विश्लेषण का परिणाम ये सुझाव देता है, कि सामाजिक भूमिका में परिवर्तन बुढ़ापे को परिभाषित करने का प्रमुख साधन है। जब कालानुक्रमिक परिभाषा को वरीयता दी जाती है। तो यह अतिरिक्त परिभाषा के रूप में सदा साथ समाहित होती है।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

- १) वृद्धावस्था की परिभाषा करना।
- २) वृद्धावस्था की समस्याओं का विश्लेषण करना।
- ३) वृद्धों से होने वाले दुर्व्यवहार को समझना।

शोध परिकल्पना (Hypothesis)

- १) आधुनिक समाज में पारिवारिक विघटन वृद्धों से दुर्व्यवहार का प्रमुख कारण है।
- २) आर्थिक निर्भरता वृद्धों की असुरक्षा बढ़ाती है।
- ३) सामाजिक मूल्यों में गिरावट से वृद्धों के प्रति संवेदनशीलता कम हुई है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन द्वितीयक (Secondary) स्रोतों पर आधारित है, जिसमें पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्टें, समाचार पत्र और सामाजिक संस्थाओं के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति अपनाई गई है।

वृद्धावस्था की समस्याएं (Problems Faced by the Aged)

वृद्धावस्था जीवन का वह चरण है जहाँ व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करता है। आधुनिक समाज में परिवार व्यवस्था और जीवनशैली में बदलाव के कारण ये समस्याएँ और भी जटिल हो गई हैं।

सामान्यतः एक बुजुर्ग व्यक्ति अग्रकित समस्याओं से रूबरू होता है :

(१) **स्वास्थ्य में गिरावट:** यह ठीक ही कहा गया है. कि 'हम जिस दिन जन्म लेते हैं, उसी दिन मरना शुरू कर देते हैं।' उम्र बढ़ने की प्रक्रिया स्वास्थ्य गिरने का पर्याय बनने लगती है। भारत जैसे देशों में युवा लोगों की मौत संक्रामक रोगों की वजह से है और वृद्ध गैर संचारी रोगों की चपेट में हैं। अधिक उम्र में स्वास्थ्य में गिरावट अच्छी गुणवत्ता, उम्र के प्रति संवेदनशीलता, स्वास्थ्य देखभाल का अभाव, स्थिति को अधिक जटिल कर देता है। इसके अलावा गरीब तक सुविधायें पहुंचने का अभाव, सूचना, ज्ञान और रोग प्रबंधन की उच्च लागत होने की कमी के चलते, वे गरीब, वृद्ध व्यक्ति वंचित हो रहे हैं, जिन्हें विशेष रूप से देखभाल चाहिए। स्वास्थ्य की गिरावट के मुद्दे के समाधान के लिये संवेदनशील ढंग से गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल बुजुर्गों के लिए उपलब्ध कराई जानी जरूरी है। स्वास्थ्य सेवार्यें संभावित रोगों को आने से रोकथाम के लिए कारगर सिद्ध हों। इसके अलावा प्रभावी देखभाल और सहायता, प्राथमिक, द्वितीय और तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के माध्यम से विभिन्न रोगों की पीड़ा से बुजुर्गों को यथासम्भव दूर रखना है। स्वास्थ्य की (प्रभावित बुजुर्ग या परिवार के लिए) लागत को देखना है, जहां वित्तीय कमी के चलते किसी बुजुर्ग को स्वास्थ्य सेवाओं के वंचित न होना पड़े। पुनर्वास, समुदाय या परिवार द्वारा विकलांगता सहायता और मृत्यु आने तक जीवन का ध्यान, वहां उपलब्ध कराई जानी चाहिए, जहां इसकी जरूरत है।



आर्थिक असुरक्षा: आर्थिक सुरक्षा की समस्या वृद्धों को तब होती है, जब चे स्वयं को आर्थिक रूप से मजबूत नहीं पाते। कई वृद्ध व्यक्तियों को या तो अवसर की कमी है या क्षमता की जिससे वे उत्पादक नहीं बन पाते जैसे पहले थे। युवाओं से प्रतिस्पर्धा बढ़ना, व्यक्ति, परिवार व समाज की मानसिकता, स्थायी कुपोषण, सीमित पहुंच और शारीरिक, मानसिक संसाधनों, अधिकारों में जागरूकता की कमी जैसे कारण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। फलस्वरूप उनकी योग्यता के अभाव के कारण आर्थिक उत्पादकता और स्वतंत्रता पर बुरा असर पड़ता है। आर्थिक सुरक्षा एक बुजुर्ग के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितनी किसी अन्य उम्र समूह के लिए। वे, जो आवश्यक आय उत्पादन नहीं कर पाते हैं, उन्हें सुविधायें दी जानी चाहिए। जितना हो सके, उन बुजुर्गों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जो आय अर्जित कर रहे हैं। और अधिक समर्थन के रूप में आर्थिक तरीके से उत्पादक रूप में साथ देना चाहिए। जो आर्थिक रूप से काबिल नहीं हैं, उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिये समाज कल्याण अनुदान आर्थिक या पूर्ण मदद के साथ प्रदान किया जाना चाहिए। परिवारों व समुदायों और स्थानीय स्वशासन के परामर्श के माध्यम से उनके साथ रहने वाले बुजुर्गों का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

पृथकता/अलगाव: पृथक रहना या अकेलेपन की त्रासदी की भावना बुजुर्गों की आम शिकायत है। या तो वे इसे खुद पर थोपते हैं या सबसे अधिक बार परिवारों/समुदाय के बुजुर्गों को जानबूझकर या अनजाने में लगाया जाता है। अलगाव से सम्बन्धित जीवन की गुणवत्ता एक दुखद गिरावट की ओर जाती हुई बेहद भयानक लगती है। यह बहुत महत्वपूर्ण है, कि बुजुर्ग अपने आसपास के घटना क्रम में शामिल रहें, परिवार व समाज से जुड़े रहें। जो वृद्धावस्था की देखभाल कर रहे हैं विशेषकर एन.जी.ओ. (गैर-सरकारी संगठन) व्यक्ति के परामर्श, समुदाय के नेताओं को संवेदनशील बनाने और समूह जागरूकता या समूह परामर्श सत्र के माध्यम से इसे सुविधाजनक बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। गतिविधियां जो बुजुर्गों पर केन्द्रित हों और जिसमें उनका समय और कौशल उपयोग में लाया जाये तो यह उनके भीतर अपनाये जाने की भावना पैदा करते हैं। इनमें से कुछ परिवारों और समुदायों के लिए भी सीधे तौर पर उपयोगी हो सकता है।

उपेक्षा खासकर वे बुजुर्ग जो कमजोर और निर्भर रहे हैं, उन्हें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक देखभाल और सहायता की आवश्यकता होती है, नहीं मिलती तो वे खुद को ऐसा उपेक्षित व्यक्ति मानने लगते हैं, जिसे सूना छोड़ दिया गया है। और ये अक्सर अलगाव के साथ जुड़ा है। टेलीविजन के रूप, बदलती जीवन शैली और मूल्यों, रोजगार की मांग, बिखरे परिवार मूल्य, प्राथमिकताओं को नये सिरे से परिभाषित करते जीवन मूल्यों से परिवारों व समुदायों में बुजुर्गों की उपेक्षा हुई है। बुजुर्ग आयु वर्ग द्वारा अन्य लोगों के समूह की तुलना में ध्यान देने की कम मांग रखने के कारण यह स्थिति और खराब हो जाती है। बुजुर्गों के प्रति उपेक्षित भाव दूर करने का सबसे प्रभावी तरीका है, कि परिवारों को परामर्श दिया जाए, समुदाय के नेताओं को संवेदनशील बनाया जाये और प्रिंट, दृश्य-श्रव्य मीडिया सहित विभिन्न मंचों पर सभी स्तरों पर इस मुद्दे को उठाया जाये। स्कूल और कार्यस्थलों पर युवा पीढ़ी को अवसर दिये जायें जो ऐसे समूहों

को सम्बोधित करें। सरकारी व गैर-सरकारी संगठन इस मुद्दे को सभी स्तरों पर गंभीरता से लें। चरम स्थितियों में कानूनी कार्यवाही और पुनर्वास समस्या के गंभीर परिणाम को रोकने के लिए आवश्यक है।

दुर्व्यवहार: बुजुर्ग दुर्व्यवहार से बेहद आहत होते हैं। उनसे दुर्व्यवहार उनका नजदीकी या परिवार का ही कोई व्यक्ति करता है, ये जोखिम अधिक हैं। जानबूझकर या अनजाने में नुकसान पहुंचाया जा सकता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है, कि इस हेतु कदम उठाए जाएं ताकि दुर्व्यवहार रोके जा सकें। और बुजुर्गों की रक्षा की जा सके। तुलनात्मक रूप से कमजोर होने के कारण बजुर्गों को शारीरिक शोषण झेलना पड़ता है। उनके स्रोत विशेषकर आर्थिक अक्सर दुरुपयोग में लाये जाते हैं। इसके अलावा बुजुर्ग विभिन्न कारणों से अलग-अलग तरीकों से भावनात्मक और मानसिक शोषण से पीड़ित हो सकता है। दुरुपयोग के प्रमुख रूपों के अध्याय के उत्तरार्ध में विशेष रूप से विस्तार के साथ चर्चा की जाएगी, जो शारीरिक, यौन, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक रही है। दुरुपयोग से सुरक्षा का सबसे अच्छा तरीका इसे होने से रोकना है। पीड़ियों के माध्यम में परिवार व समुदायों में जागरूकता फैला कर इसे बाहर करना चाहिए। ज्यादातर मामलों में दुर्व्यवहार, अवसाद और दूसरों को दुख दर्द और दण्ड देने की प्रकृति के कारण है। यह अधिकार जताने के लिए भी किया जाता है। सूचना और शिक्षा के द्वारा युवा लोगों के समूह को प्रशिक्षित करके दुर्व्यवहार की रोकथाम की जा सकती है। इस संबंध में बुजुर्गों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना आवश्यक है। जहां आवश्यक हो वहां कानूनी कार्यवाही की जानी चाहिए। ऐसे व्यक्तियों से परामर्श व साथ ही पुनर्वास के उपाय किये जाने चाहिए। जिन बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार हुआ है। उन्हें सलाह दी जानी चाहिए और अगर आवश्यकता हो तो पुनर्वास भी सुनिश्चित किया जाये ताकि वे कम से कम नकारात्मक प्रभाव से ठीक होने में सक्षम हों।

भय : कई वृद्ध व्यक्ति भय में जीते हैं। तर्कसंगत या तर्कहीन, जो भी हो, यह समस्या जो बुजुर्ग झेलते हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक प्रभावी ढंग से सम्बोधित करना आवश्यक है। भय से पीड़ित बुजुर्गों को आश्वस्त करना जरूरी है। उनकी आवश्यकताओं के अनुसार, उसी रूप में इलाज करना चाहिए। डर का तर्कहीन आधार होने पर अथवा तर्कसंगत असल रूप में भय होने पर इसकी रोकथाम, उपाय और उचित कार्यवाही कब और कहाँ संभव है ये पहचान करने की जरूरत है।

आत्म सम्मान की कमी: वृद्ध व्यक्तियों के बीच में आत्मसम्मान की कमी परिवार या समाज के अलगाव, उपेक्षा, कम जिम्मेदारियां, मूल्य में कमी या क्षमता होना एक जटिल हेतु विज्ञान है। आत्मविश्वास पुनः लौटाने के लिए खुद की पहचान करने की जरूरत है। उन कारणों को दूर किया जाए, जिनके फलस्वरूप आत्मविश्वास कम होता है। अलगाव और उपेक्षा को ऊपर चर्चा की जा चुकी है। स्वयं की क्षमता, मूल्य और कौशल का उपयोग करने के लिए सीखो, गतिविधियों में भाग लेने, बुजुर्गों को प्रोत्साहन देने, नए लोगों के विकास या खुद की उत्पादकता बनाए रखने से सुधार किया जा सकता है। गंभीर स्थितियों में व्यक्तियों और उनके परिवारों से परामर्श/उपचार की आवश्यकता होती है।

नियंत्रण में कमी : वृद्ध व्यक्तियों की इस समस्या के कई पहलू हैं। यद्यपि कुछ आत्म साक्षात्कार और स्थिति की वास्तविकता को स्वीकार करते हैं, तथापि दूसरे अपने संसाधनों शारीरिक शक्ति, शरीर प्रणाली, वित्त (आय) सामाजिक या नामित स्थिति और निर्णय लेने का नियंत्रण खोने लगते हैं। शीघ्र हस्तक्षेप, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से नियंत्रण की कमी को, नकारात्मक सोच को रोकने की जरूरत है। यह समाज के लिए भी महत्वपूर्ण है और व्यक्तियों के लिए भी, कि ये लोग क्या हैं इस बात का सम्मान करना सीखें बजाय इसके कि वे कौन हैं और उनकी क्या अहमियत है। जब ये भावना गम्भीर हो, तो व्यक्तियों और उनके परिवारों को स्थितियों के निबटने की सलाह दी जा सकती है। बुजुर्गों के स्वास्थ्य में विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम द्वारा सुधार किया जा सकता है। और अंत में बुजुर्गों को प्रोत्साहित करके उनके कौशल का उपयोग और प्रशिक्षण द्वारा उन्हें उत्पादक बनाने से सम्मान और प्रशंसा प्राप्त करने में सहायता मिल सकती है। बुढ़ापे की ओर तैयार होने की समस्या को रोका जा सकता है। मानव संसाधन विभाग के सहयोग व कार्यस्थल के माध्यम से पीढ़ियों में जागरूकता फैलायी जा सकती है, जो सेवानिवृत्त की ओर अग्रसर कर्मचारी को बुढ़ापे के मुद्दों का सामना करने के लिए तैयार कर, एक सक्रिय भूमिका की शुरुआत कर सकती है। अनियमित व्यवसायों जो अधिकार स्वरोजगार, किसानों सहित में लगे हुए हैं, उन लोगों के लिए मीडिया माध्यम से और भी क्षेत्र में सरकारी गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। बुढ़ापे से निबटने में मदद करने के लिए विभिन्न मंचों पर समूहों को संबोधित किया जा सकता है।

निष्कर्ष(Conclusion)

वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार एक गंभीर सामाजिक समस्या बन चुकी है। यदि समाज ने समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए, तो यह समस्या और भयावह हो जाएगी। आवश्यक है कि हम वृद्धों को सम्मान, सुरक्षा और सहयोग प्रदान करें, ताकि वे गरिमामय जीवन जी सकें।

सबसे बुनियादी स्तर पर अधिक से अधिक महत्व बुजुर्ग व्यक्ति प्रति दुर्व्यवहार रोकथाम को दिया जाना चाहिए। एक समाज के निर्माण के लिए बड़े बुजुर्गों को पर्याप्त सम्मान, जीवन जीने का हक, जीवन की आवश्यकताओं के साथ आत्म पूर्ति को वास्तविक अवसरों को प्रदान करना है। यह उन समाजों के लिए भारी चुनौती है जो गरीब हैं। रोकथाम, जागरूकता के साथ शुरू होती है। सार्वजनिक शिक्षा और प्रशिक्षण जागरूकता बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। समुदाय और संस्थागत सभी स्तरों पर स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सेवाओं का बुनियादी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। मीडिया, जनता के साथ-साथ अधिकारियों के बीच समस्या और उसके समाधान संभव करने के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं।



संदर्भ (References)

- Baumann, E.A. (1989). Research Rhetoric and the Social Construction of Elder Abuse.
- Brubaker, T.H. & Powers, E.A. (1976). Journal of Gerontology.
- Glascock, A.P. & Feinman, S.L. (1980). Comparative Social Research.
- Gorman, M. (1999). The Ageing and Development Report.
- भारत सरकार - सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय।
- HelpAge India - वार्षिक रिपोर्ट।

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect those of the publisher, editors, or the editorial board.*

